© January 2026 | IJIRT | Volume 12 Issue 8 | ISSN: 2349-6002

पारो क समाधान तकैत नवतुरिया

डा सुरेन्द्र भारद्वाज [1,] डा. विजयेन्द्र झा [2,]
1ण्वरीय सहायक प्राध्यापकए मैथिली विभागए सी० एम० कालेजए किलाघाटए दरभंगा बिहारए भारतए पिन.846004ए
2ण्पूर्व प्राचार्यए सम्प्रति . अध्यक्ष मैथिली विभागए एलण् एनण् टीण् कालेज ;अंगीभूत इकाईए बीण् आरण् एण् बीए यूण्द्धए मुजफ्फरपुरए बिहारए भारत

सारांश **साहित्य होइछ समाजक दर्पण। तात्कालिक समाजक संस्कृति.सभ्यताए साहित्यए कलाए धर्मए परिवारए समाजमे घटित घटनाए उत्थान.पतनए हास्य.रूदनए मानव. मनक आशा.आकांक्षाए राग.द्वेषए घृणा.स्नेह आदि साहित्यकारक मनकेँ उद्वेलित प्रभावित करैत रहैछ। फलस्वरूप साहित्यकारलोकनि ओकरा एक गोट साहित्यिक विधाक रूप दश् तकर विश्लेषणक सङ्गहि निदानक बाटो सुझबैतए चेतना जगबैत रहैत छथि । साहित्यमे परम्परागत ओ तात्कालिक संस्कृतिक सङ्ग माटि.पानिक सोन्हगर गन्ध सेहो भेटैछ । मनुष्य जाहि माटि.पानिमे पालित.पोषित रहैत अछि तकर प्रभाव ओकर व्यक्तित्वमे सन्हिआयल रहब स्वाभाविके। यात्रीक जीवन ओ हुनक साहित्यिक सुषमा. सौरभसँ समकालिक मिथिलाक जनजीवनक दशा स्पष्टतः प्रतिबिम्बित होइछ। ओ अपन ओजपूर्ण व्यक्तित्वक प्रभावेँ सामाजिक जीवनमे नव बाट सुझयबाक युक्ति देलनिए से छल परिवर्तनक हेतु करोट फेरबाक लेल। यात्री श्पारोश्क बहन्ने मिथिलाक जमकल.ठमकल पानिमे ढेप मारलनि। लोक ओकर प्रतिध्वनिक दिशामे साकांक्ष भेल। उपन्यास नायिकाक मार्मिक वेदनाकेँ मैथिल ललनाक वेदना संग जोड़लक। निज स्वार्थक बलीवेदीपर बेटीक सुख.सेहन्ताक बलिदान दैत रहबाक कुप्रथाक मादे विचार करब आरम्भ कयलक। मिथिलाक नवतुरियाकेँ नव दिशा भेटलैक। ओकर विचारक परिष्कृत आश् सोझड़ायल रूप प्रत्यक्ष होयब स्वाभाविक रहैक। पारोक बहैत नोरकेँ श्नवतुरियाश्मे नवयुवकक माध्यमसँ पोछल गेलैक। नव विचार.संस्कारक धरातलपर आडम्बरहीन आश् गलित.गंधित व्यवस्थाक समापन एकर ध्येय रहलैक अछि। तहिया व्यवस्था परिवर्तन जें अनिवार्य बूझल गेल तेँ ओकर पक्षपातीक रूपमे साहित्यकारक लेखनी अग्रसर होइत रहल। यात्री एहि कोटिक व्यवस्था परिवर्तनक अगुआ भेलाह आश् हुनक साहित्यिक अवदान अविस्मरणीय भश् गेल।**

बीज.शब्दरू **पञ्जीप्रथाए लोक.लाजए नवतुरियाए अभिशप्तए कर्णाटवंशए पुरानपंथीए दौहित्रीए संताप**

I. प्रस्तावना

मैथिली साहित्यमे कविताए कथाए उपन्यासए निबन्ध ओ संस्मरण विधामे सुपरिचित ओ एहिसभ विधाक माध्यमसँ साम्यवादी समाजक निर्माणमे आजीवन निरत प्रसिद्ध मैथिली कवितासंग्रह श्पत्रहीन नग्न गाछश्क रचनाक लेल 1968मे साहित्य अकादेमीक सम्मानसँ सम्मानित ओ महत्तर सदस्यता प्राप्त वैद्यनाथ मिश्र ;1911.1998द्ध वस्तुतरू मैथिलीक श्यात्रीश् आश् हिन्दीक श्नागार्जुनश् उपनामसँ जानल जाइत छथि। यात्री मूलतः कवि आश् उपन्यास रचनाक क्षेत्रमे सर्वाधिक प्रसिद्धि प्राप्त कयलनि। हिनक पहिल काव्यध्कविता रचना श्मिथिलाश् ;मैथिली मासिकए लहेरियासरायद्धक वर्ष.1ए अंक.9ए 1929मे श्शोक ध्वनिश् मुख्य शीर्षकक अन्तर्गत प्रकाशित भेल अछि।ष्1ष्

आलोच्य रचनाकारक हिन्दी आश् मैथिलीमे श्रेष्ठ रचनासभ भेटैत अछि। आश् से परिमाणात्मक आश् गुणात्मक दुहू दृष्टिसँ। हिनक हिन्दी रचनाक सूक्ष्म अवलोकन एहि प्रकारें कयल जा सकैछ. रतिनाथ की चाचीए बाबा बटेसरनाथए दुखमोचनए बलचनमाए बरुण के बेटेए नई पौधए जमनिया का बाबा आदि ;उपन्यासद्धय युगधाराए सतरंगे पंखोंवालीए प्यासी पथराई आँखेंए तालाब की मछलियाँए चंदनाए खिचड़ी विप्लव देखा हमनेए तुमने कहा थाए पुरानी जूतियों का कोरसए हजार.हजार बाँहोंवालीए पका है यह कटहलए अपने खेत मेंए मैं मिलिट्री का बूढ़ा घोड़ा ;कविता संग्रहद्धय भस्मांकुरए भूमिजा ;खंडकाव्यद्धय चित्रा एवं पत्रहीन नग्न गाछ ;हिन्दीमे अनूदितद्धय एकर अतिरिक्त संस्कृतमे धर्मलोक शतकम् ;संस्कृत काव्यद्ध आश् संस्कृतसँ किछु हिन्दीमे अनूदित रचनासभ।ष्2ष्

यात्रीक मैथिली रचनासभ परिमाणात्मक दृष्टिसँ भने अल्प होअयए मुदा गुणात्मक रुपमे श्रेष्ठतम योगदान देलक अछि। हिनक मैथिली रचनासभक अवलोकन एहि प्रकारें

कयल जा सकैछ. चित्रा ;28 टा कविताए 1949मे प्रकाशितद्धए पत्रहीन नग्न गाछ ;44 टा कविता आश् 09 टा गीतए 1967मे प्रकाशितद्धय असंकलित कवितासभ ;75 टा कविता ;यात्री समग्रद्धय पारो ;उपन्यास . 1946द्धए नवतुरिया ;उपन्यास. 1954द्धय फुटकर गद्य ;कथा. 6ए संस्मरण. 3ए लेखध्व्याख्यानध्रिपोर्ताजध्स्फुट.6द्धय स्तम्भ लेखन . 15ए पत्र आदि।ष्३ष

साहित्यक विविध विधामे उपन्यास आधुनिक युगक सर्वाधिक सशक्त एवं महत्वपूर्ण विधाक रूपमे मान्य अछि। यात्रीक उपन्यासमे तात्कालिक समाजक उठा. पटककेँ देखाओल गेल अछिए जकर मुख्य कारण मिथिलामे कर्णाटवंशीय राजा हरसिंहदेवक समयसँ चलि आबि रहल पञ्जीप्रथाए मैथिल ब्राह्मण आओर कर्ण. कायस्थक वर्गीकरण प्रक्रियाक आरम्भ होयब छलय जे बादमे अनमेल विवाह ओ बहु.विवाह.सन प्रथाकेँ जन्म देलक।ष्४ष

आधुनिक चेतनशील मैथिल समाजमे कन्यादानक जे स्वरूप अछि तकर विभत्सता दहेज परम्पराक कारणे अछि। निम्न.मध्यवर्गीय ब्राह्मणक लेल ई एक गोट असहजए मुदा अवश्यम्भावी पीड़ा रहल अछि। लोकलाजसँ बचबाक हेतु परम्पराक मारल खून.पसेना बहाय अर्जित कयल जमीन बेचि कश् आजुक निम्न.मध्यवर्गीय मैथिल समाज कन्यादान.सन पवित्र यज्ञ करैत अछि आ नैहरसँ बेसी सुख सासुरमे भेटबाक आशीषक सङ्ग बेटीकेँ विदा करैछ। मुदा श्पारोश्ए श्नवतुरियाश् जाहि कालए वर्ग ओ परम्पराक कथा कहैछ तकर विषयमे मैथिली कथा साहित्यक स्थापित लेखिका डा० नीता झाक उक्ति द्रष्टव्य थिक.

ष्समाजक तात्पर्य छल ब्राह्मण समाजए ओहि समाजक सभसँ पैघ समस्या छल कन्यादान। कन्यादानमे असम विवाहक कारण छल पञ्जीप्रथा एवं दहेजप्रथा । ण्ण्तकर कारणे होइत छल दुष्परिणाम। इएह छल लेखक लोकनिक विषयए भूमि एवं चरित्रक चयन।ष्५ष

यात्री उपन्यासक फलक व्यापक नहिओ रहैत हुनक दृष्टि जतेक दूर धरि जा सकल ताहिमे मिथिलाक ग्रामीण समाजक यथार्थए दू.पीढ़ीक वैचारिक संघर्ष ओ धरातलपर पसरल वर्ग.विषमतापर व्यंग्य करैछ। जनसामान्यक पीड़ाए अभिशप्त नारीवर्गए नवतुरियाक आन्दोलन एक टा नव आ सशक्त यथार्थक अङ्ग बनि हुनक उपन्यासकेँ गतिशीलता प्रदान करैछ। गामक सामन्ती व्यवस्थामे दम घुटैत भूमिजीवी कृषकहि टाकेँ ओ नहि देखलनिए अपितु ओहि व्यवस्थाक विरुद्ध विद्रोहक आग्रही जनशक्तिक नेतृत्वकर्ताकेँ सेहो देखलनिय सङ्गहि देखलनि ओहन प्रगतिशील शक्तिकेँ जे गाममे हकन्न कनैत जीवनक अन्त कश् नव जीवन आरम्भ करबा लेल सतत प्रयत्नशील छल।

मनुष्यक अपन व्यक्तिगत जीवन.संसार होइत छैकए जे सामाजिक जीवनसँ कम रुचिपूर्ण ओ महत्वक नहि। श्पारोश्मे व्याप्त अनमेल विवाह.जन्य असन्तोष मनुष्य मात्रक असन्तोष भेलहुँ जनसामान्यक असन्तोष कहाओत। कारण जे व्यक्ति समुदायक मानसिकताकेँ उघबा लेल मजबूर होइत अछि। गत सदीक चारिम दशकमे मिथिलाक ललनाक अन्तर्मनमे अभिलाषाक हिलकोर उठि गेल छलए मुदा ओकरा धरातलपर अनबाक लेल गति आश् बाटक अभाव खटकि रहल छलैक। विभिन्न माध्यमे देश.दुनियांक खबरिसँ मिथिलाक नवतुरियाकेँ कोनो मतलब नहि रहैक एहन गप नहिए मुदा पूर्वसँ अमरलत्ती जकाँ पसड़ल कुरीतिए आडम्बरयुक्त आश् गलित व्यवस्थाक तश्रमे दबायल.ओझड़ायल एहिठामक युवा तेना ने सकपंज छल जे ओकरा अपन स्थितिसँ उबरबाक कोनो उपाये नहि सूझि रहल रहैक। ओ सभ किछु जनितहु दिशाहीन छल। एहि तरहेँ मिथिला समाज समकालिक कुरीति आश् कुव्यवस्था रूपी दल.दलमे फंसल रहल। यात्रीक उपन्यास द्वय ताही दुरूस्थितिक तात्कालिक परिणाम थिक।

II. मुख्य विषय:

अनमेल.वृद्ध.विवाहक भमरमे पड़ल मिथिलाक ललनाए जकरामे चेतनाक बीजारोपण मात्र भेल छलए ओ चुप्पे रहि पुरुष प्रधान समाजक सभ शोषणकेँ आँखि मूनि सहैत रहलि। श्पारोश्क कथावस्तु निर्माणमे औचित्यक त्याग भेल अछिए मुदा आजुक परिप्रेक्ष्यमे देखल जाय तँ समाजमे एहन.एहन अमर्यादित घटना चोरा.नुका कश् होइते रहैत अछि। आजुक युवावर्गकेँ पार्कमेए सिनेमाघरमेए कतोक सार्वजनिक स्थलपर प्रेमालाप करैत साक्षात् देखल जाइछ। लोकतन्त्रात्मक पद्धतिसँ बनल न्यायालयमे मताधिकार प्राप्त नागरिकक प्रेम.स्वीकारोक्तिकेँ मर्यादित कश् देल गेल अछि ।

जीवनमे संस्कार ओ अनुशासनकेँ परतन्त्रताक बन्धन मानि एहिसँ मुक्त रहब अति महत्वपूर्ण मानल जाय लागल अछि। मिथिलाक समाज परम्परावादी रूढ़िसँ ग्रस्त डपोरशङ्खी प्रवृत्तिसँ भरल छल से हमर साहित्य कहैत

अछि। एहिठाम संस्कार एवं शासन दुहूक प्रमुखता रहलैक अछिए मुदा जँ वर्तमानकेँ छोड़ि पाछाँ देखल जाय तँ स्वतन्त्रता तथाकथित जमिन्दार.बबुआन ओ रूढ़ि. परम्परावादीए शोषकक मुट्ठीमे बन्द छल। स्वतन्त्रताक अभावमे मानव.मनक लेल की नीक आश की अधलाह होइत छैक तकर विचार करब महत्वपूर्ण नहि छलैक।

स्वतन्त्रतासँ तात्पर्य ओकर शिक्षाए अभिव्यक्ति ओ जीवनक समस्त स्थिति छैक जे मनुष्यक विकासमे सहायक होइत छैक।

पारो परतन्त्रताक सिक्कडिमे जकड़ल छलि । स्वतन्त्रता ओकरासँ कोसहु दूर छलैक। ओ सामाजिक परम्परासँ नीक जकाँ अवगत छलिए तथापि कुहेससँ बहरयबाक चेष्टा करैत रहलि। मिथिलाक ललना पुरुष प्रधान समाजक निमूह धन छलिए जे नुकाइये कश अपन इच्छाकेँ अव्यक्तसँ व्यक्त रूपमे अनलकए तकर उत्तरदायी तात्कालिक सामाजिक व्यवस्था छल।

श्यात्रीश मिथिलाक सामाजिक जीवनक अनुभूति कश ओकर पटाक्षेप कयलनि श्पारोश्मे। एहिमे अनमेल.वृद्ध विवाहक दुष्परिणाम स्वरूप लोकमर्यादाक अवहेलना कोना होइत छलए तकर स्वरूप श्यात्रीश द्वारा श्पारोश उपन्यासमे ठाढ़ कयल गेल अछि।

श्पारोश उपन्यास मिथिलाक ग्रामीण समाजमे विद्यमान संक्रमणक दुःस्थिति ओ तकर निदानक बाट सुझबैत अछि। सङ्गहि भविष्यमे होमयबला दुःपरिणामक सम्भावना दिश सङ्केत सेहो करैत अछि।[७]

समाजमे विवाहए यौन.सम्बन्धक परम्पराए नियमन ओ वंशवृद्धिक सङ्ग परिवारक गठन लेल एक महत्वपूर्ण संस्थाक नाम थिक। मिथिलाञ्चलक ग्रामीण समाजमे पुरान पीढ़ीक दृष्टिमे विवाह भाग्यपर निर्भर करैत अछिए जकर निर्माता वा पोषक ओ स्वंय अर्थात् पुरुष समाज भश जाइछ। जँ ई गप सत्य तँ असंगत इहो नहि जे पति.पत्नीक बीच अनिच्छित कटुताक मूल कारण यौन असामञ्जस्यए अनिच्छित विवाह ओ अशिक्षा छल।

श्यात्रीश देखलनि जे परम्परावद्ध ब्राह्मण समाज अपन दरिद्रताक कारणहि विवाहमे क्रय.विक्रयए अनमेल विवाह. सन प्रथाकेँ उघने जा रहल छलए मुदा समाजकेँ बुझबामे ई नहि आबि रहल छलैक जे मैथिल.संस्कृति एवं लोकमर्यादाक लोप कोन रूपेँ ओ कोन गतिसँ भश रहल छैक। तेँ ई कहल जा सकैत अछि जे श्यात्रीश्ए साहित्यक माध्यमसँ सामाजिक यथार्थ.बोध कराओल ।

श्पारोश्मे मैथिल ललनाक आशा.आकांक्षाकेँ व्यक्त कयल गेल अछि । पारोक अभिलाषा रहैक जे जोड़ी तुरियाक होअय सेहो जानल.चीन्हल। तेँ बिरजू जकरासँ पारोकेँ भाय. बहिनिक सम्बन्ध रहितहुँ प्रेम.भाव रहैक आश तकरहि पैर छूबि आशीर्वाद रूपमे अगिला जनममे सम्बन्धक कोनो प्रतिबन्ध नहि रहयए केवल प्रेमभाव रहयए मङ्गैत अछि । स्पष्ट होइछ जे समाजमे कन्या स्वेच्छया अपन पति तकबाक आधार प्रेम मात्रकेँ बनबय चाहलक। ओकरा अगिला जनम ई शासित नहि उठबय पड़ौकए तकर ओ आकांक्षी अछि।[७] पारोक एहि उक्तिमे कटु सत्यक भाव बुझना जाइछ । एहिठाम जीवनक समस्त असंतोषए वेदना आ संतापक स्वरमे मानवीय भावनाक सूक्ष्म विश्लेषण भेल अछि । जीवनक विडम्बनाए बेमेल विवाह एवं असफल सिनेहक आधारपर पीड़ित ओ शोषित पारो प्रेम.पूर्ण स्वतन्त्रताक माँग करैत अछिए संस्कारगत परम्पराक विरोध.विद्रोह करैतए खुलि कश नहि ।

श्पारोश्मे मैथिल ललनाक आशा.आकांक्षा ओकर स्वतन्त्रता मनमे उपजल संघर्षक चिनगी भुस्साक आगि नहुँ.नहुँ सुनगि कश रहि जाइत छैक। ओ संस्कारगत परम्पराक संरक्षणक अढ़मे सभ सेहन्ताकेँ तिलाञ्जलि दश देलक। मुदा तकर विरोधक श्री गणेश भेल श्यात्रीश्क नवतुरियाश उपन्यासमे। महान् शब्दशिल्पी द्वारा एहन विरोध नायिका वा ओकर पारिवारिक सदस्यहि मात्रसँ नहिए सामुदायिक रूपमे गामक नवयुवकक सहयोगसँ प्रकट कराओल गेल अछि।

श्नवतुरियाश शब्दक अर्थ थिक युवावर्गए नवीन पीढ़ीए नवयुवक समाजक सङ्ग नव विचारधाराक आग्रही वा पुरानपन्थी रूढ़िए अंधविश्वास.सन विचारपर आघात कयनिहार लोकवृन्द। श्नवतुरियाश उपन्यास गाममे पसरल रूढ़ि.ग्रस्त परम्पराकेँ तोड़बाक कथा कहैत अछि । एहिमे गामक युवक.वृंद जे अपर.मिडिल घरि पढ़लए चेतनशील व्यक्तिक समूह अछि सैह थिक नवतुरिया।

श्नवतुरियाश्मे एक गोट गप जे घ्यान देबा योग्य अछि से थिक जकरा हेतु लड़ाइ लड़ल गेलैक अछिए तकर सक्रिय सहभागिता एहिमे छैक। तेँ नवतुरियाक संघर्षक गाथामे हेहुआए दिगम्बरए बूलोए माहे आदि नवयुवकक सङ्ग

विशेश्वरी.रामेश्वरीक सक्रिय सहभागिताकेँ सेहो देखाओल गेल अछि। कथामे रामेश्वरीक आक्रोशकेँ स्वतः देखल जा सकैछ।‍॰८॰ उपन्यासमे नौगछिया गामक गरमदलक सदस्य दिगम्बरए माहेए बूलोए गनउराए टुनाइ थिक जे सारहीन ओ अनावश्यक रूढ़िकेँ तोड़बाक लेल सभ किछु करैत अछि। एते घरि जे बूढ़ पुरानसँ गारि.फज्झति सुनियो कश ओकर साहस क्षीण नहि होइत छैकए अपितु आओर अधिक शक्तिक ओ सङ्ग बढ़िते जाइछ ।

जेॅंं कि उपन्यासक कथा.भूमि मिथिला अछि तेँ एहिठामक रूपरेखा देखबामे अबैत अछि । तात्कालिक समाजक अनमेल विवाहए रूढ़िए ढोंगक जे कथा शपारोश कहलक तकर समाधान शनवतुरियाशमे नवतूरकेँ आगाँ कश यात्री देखओलनि अछि । नारी.शोषणक अप्रत्यक्ष विरोध शपारोशमेए मुदा प्रत्यक्षतः शनवतुरियाशमे गामक चेतना सम्पन्न युवकलोकनि सँ भेल अछि। अंधविश्वासए रूढ़ि ओ जड़त्व प्रकृक्तिसँ जकड़ल आश दर्पसँ भरल चतुरानन मिश्र पचपन वर्षक आयुमे हुनक पाँचम विवाहक विरोधीए निरपराधी नवतुरिया दलकेँ न्याय मन्दिरमे बलि चढ़ाय अपन कार्य सिद्ध करबाक आयासमे सतत लागल रहैत छथि।‍॰९॰ मुदाए नवतुरियाक दल हुनका.सन.सन कतेको लोककेँ निराश कश दैत अछि। ओ विनम्रताक प्रतिमूर्ति सेहो थिक।‍॰10॰

शनवतुरियाश जहिना चतुरानन मिश्र आश खोखाइ झा मात्रक कथा नहि भश कश सम्पूर्ण मैथिल समाजक कथा थिकए तहिना नवतुरियाक दलसँ उपन्यासक चारि.पाँच नवयुवक मात्रसँ नहिए अपितु समस्त मिथिलाक नवचेतना सम्पन्न नवतूरक कथा शयात्रीश कहलनि अछि । एहि उपन्यासमे पूँजीपतिए पुरातनपन्थीए जमिन्दार.शोषक चतुरानन मिश्र. सन कतेको व्यक्तिकेँ नवता चेतनाक प्रति विरोधाभाव सहजहिँ दृष्टिपर अबैछ।‍॰11॰

शनवतुरियाशक नारी समाज बन्हन स्वरूप परम्पराक विरोधी अछि जे प्रत्यक्षरूपे ठाम.ठाम दृष्टिगोचर होइछ । एहन नारी समाज जे घरक पछुऐत नहि देखने छलि से अपन धी.बेटीकेँ अपर प्राइमरी घरि शिक्षित कयलक। माय. बापक एक मात्र संतान विशेश्वरीक इच्छा छैक बीस.बाइस वर्षक दुलहा पयबाकए मुदा इच्छा पूर्ति भश जयबाक उपरान्त सुख.शान्तिसँ प्रेमक मधुर वंशी बजयबा लेल अशान्वित बीसोकेँ जखन ई बुझबामे अबैत छैक जे ओहि राति ओकर मातामह अपन दौहित्रीकेँ अपनहि हाथे परम उत्साहसँ बलि देथिन तँ ओकर कोंढ़ उनटय लगलैक।‍॰12॰ ओ अथ.उथमे पड़ि जाइछ आश एक बेरि पुनः परम्परासँ बान्हलिए छहरदेवालीसँ घेड़लि एकटा मैथिल कुलीन कन्याए अवला जे बहुत किछु सोचितो अनुत्तरित भश जाइछ।‍॰13॰

मुदाए ओहि छहरदेवालीकेँ ढाहबाक हेतु संकल्पित अछि नौगछिया गामक युवा.चेतन। ओसभ समाजक कायाकल्प कयलक से विवाहकेँ रोकिये कश नहिए अपितु वाचस्पति झा.सन समाजवादी क्रान्तिकारी नवतुरिया सदस्यक सङ्ग मिथिलाक विधि.व्यवहारक अनुसार ओकर विवाह समपन्न कराय।

प्रगतिशील चेतनाक वाहक वाचस्पति झा विशेश्वरीक पाणिग्रहण करब स्वीकार करैत छथि । वाचस्पतिक विचार स्वस्थ ओ चेतनशील मनोवृत्तिक परिचायक थिक। हुनक विचार उपन्यासक एक पात्र दुर्गानन्दक सङ्ग भेल गपक अंशसँ स्पष्ट होइछ.

ब्यक्तियेक संकट समाजक संकट थिक ओ समाजक संकट समस्त देशक भS जाइछ ।‍॰4॰

नवतुरियाक दल गामक एहन कतोक देबालकेँ तोड़बाक हेतु संकल्पित भेल। जेना अशिक्षाक देवाल तोड़िए पोथीक संग्रहए पुस्तकालयक स्थापनाक सङ्ग दू.तीन टा समाचार पत्र सेहो ओतय नवतुरियाक सहयोगसँ आबय लागल। से सभ तँ भेल यात्रीक नवतुरिया वर्गक माध्यमसँ। तथापि एहिसँ सम्पूर्ण गाम.समाजक हित स्थिर भेलैक। जाहि तथाकथित कुलीनतावादी मैथिलक वैचारिक स्खलनक कारणे समस्त मिथिलाक गाम.गामक विचार.व्यवहार ओ संस्कार तिरोहित भेल जा रहल छलैकए ताहिपर वज्राघात कयनिहार भेलाह यात्री.सन समकालिक लेखकलोकनि।

III. निष्कर्ष:

यात्री शपारोश आश शनवतुरियाशक माध्यमसँ मिथिलाक जड़वत् समाजक आख्यान गढ़लनि। वैवाहिक दुरूस्थितिक यथार्थ चित्रण करैत सामाजिक विडम्बनापूर्ण जीवनक वर्णन करबामे सफल मात्र नहि भेलाहए अपितु समाजकेँ कुरीतिक बाटपर चलबासँ रोकलनि। ताहि हेतु सोचबाक लेल बाध्य कयलनि। एहि उपन्यासक माध्यमसँ ओ सभ ठाम नवताक पक्षकार साबित भेलाह अछि। देशक कर्णधार युवा.शक्तिसँ सभ किछु सम्भव छैक। उत्साहीए सद्मार्गी आश सदाचारीक प्रतीक युवालोकनि सँ गाम.सुधार आश समाज.सुधारक आकांक्षी छथि यात्री। अनमेल.जन्य

वैवाहिक परम्पराक धुड़विरोधी यात्री अपन रचनाक माध्यमे नहि मात्र अमानवीय विचार.व्यवहारक कायाकल्प कयलनिए अपितु चेतनाक अलख जगौलनि मैथिल जनमानसमे। अनमेल आश बहुविवाहक समर्थन करैत अधिकांश कुलीनतावादी मैथिलक वैचारिक परिष्कार यात्री अपन रचनाक माध्यमे कयलनि। यात्री अपन दुहू औपन्यासिक रचनाक माध्यमे समकालिक मैथिलक सामाजिक ओ आर्थिक विडम्बनापूर्ण जीवनक चित्र खिचलनि। जेना पूर्वमे कहल अछि जे नवतुरिया थिकाह. नव चेतनासँ सम्पन्नए नव विचार भगिमासँ पूर्ण नवयुवकलोकनि। एहिठाम युवकलोकनिमे ओहो व्यक्ति सभ अओताह जेसभ नव विचारक सङ्ग समाजक पुनर्निर्माणमे अग्रणी छथिए खाहे ओ पचास.पचपन वर्षक बूढ़े कियैक ने होथि। जँ ई बात सत्य तँ नवतुरियाक पहिल सदस्य नायक होयताह स्वयं उपन्यासकार श्रीयात्री। वयसमे वृद्ध रहितहुँ विचार.संस्कारमेए समाज.विकासक बीड़ा उठयबामेए नारी समस्याकेँ दूर करबामेए नवयुवकलोकनि कैँ जागृत करबामे वस्तुतः ओ नव भेलथि ।

उपन्यासक प्रासंगिकता ओ युवा चेतनाक प्रसंग मैथिली कथा.साहित्यक स्थापित कथाकार डा० विभूति आनन्दक निम्न वाक्यांशकेँ एतय उद्धृत करब समीचीन बुझैत छी.

ञनवतुरियाक सोच यात्रीक व्यक्तित्वक सोचक संग जुड़ल अछि । एहि सोचक उपयोग यात्रीजी अपन माटि पानिमे करै छथि जे जड़.स्पन्दनहीन आ पण्डिताउ मानसिकता सँ जकड़ल छल। मिथिला भू.खंडक मध्य सँ पनपल कुरीतिक विरुद्ध संघर्षए जे ओही माटि.पानिक अंकुर द्वारा कएल जाइ छै। तेँ सूत्र रूपमे कही तऽ नवतुरियाक सोच जमकल. ठमकल पानिमे ढेप मारब थिक आ ओकर हिलकोर के यात्री मोनक वैचारिक दृढ़ताक नाम देल जाइ तऽ से असंगत नहि होएत ।[15]

सन्दर्भ सूचीरू

[1] यात्रीए वैद्यनाथ मिश्र. यात्री समग्ररू 2022ए राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०ए अशोक राजपथए पटनाए पृ०. अप

[2] वैहए पृ०. कभर

[3] वैहए पृ०. अनुक्रम

[4] झाए प्रोफेसर रमानाथ. मैथिल ब्राह्मणों की पंजी व्यवस्था।

[5] समकालीन उपन्यासमे लोकजीवन आ अन्तर्दृष्टि. डा० नीता झा ;सं०. मैथिलीक समकालीन उपन्यासए सं०. रमानन्द रेणुद्धए पृ०. 103

[6] मैथिल समाज. पंचानन मिश्रए शेखर प्रकाशनए पटनाए पृ०. 59

[7] पारो ;उपन्यासद्ध. श्री वैद्यनाथ मिश्र श्यात्रीश्ए पृ०. 95

[8] नवतुरिया ;उपन्यासद्ध. श्री वैद्यनाथ मिश्र श्यात्रीश्ए पृ०. 5.6

[9] वैहए पृ०. 90

[10] वैहए पृ०. 68

[11] वैहए पृ०. 69

[12] वैहए पृ०. 29.30

[13] वैहए पृ०. 44

[14] वैहए पृ०. 89

[15] 15ण यात्रीक नवतुरिया. विभूति आनन्द ;भाषा.टीकाद्धय पृ०. 61